Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1 – 2025

Impact Factor: 7.665, UGC CARE I

भारतीय संगीत वाद्य (प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल) के संदर्भ में

Dr. Anamika Rani , Assistant Professor of Music (V)

Pt. C.L.S.Govt. College, Karnal

मानव ने प्राचीनकाल से ही अभिव्यक्ति के लिए संगीत का प्रयोग किया है। आदिम सभ्यता के समय मानव द्वारा जिन वाद्ययन्त्रों का प्रयोग किया गया, वे अविकसित अवस्था में थे। आज के समय में जो वाद्य दिखाई देते हैं, वहाँ तक पहुँचने में वाद्यों का एक श्रृंखलाबद्ध इतिहास है। प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक काल के वाद्यों के अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीनकाल के वाद्य पहले बहुत ही साधारण थे। समय के साथ उनमें क्लिष्टता तथा बजाने में कुशलता आई। प्रारम्भिक वाद्यों में सौन्दर्यात्मकता का अभाव था। उन वाद्यों की ध्वनियाँ तेज नादयुक्त तथा तीखी थीं, परन्तु धीरे-धीरे मानव ने अपनी बुद्धि के विकास के साथ वाद्यों की सामग्री बनाने के ढंग व बजाने के प्रयोग में परिवर्तन किया। वाद्य शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ 'वादनीय' या 'बजाने योग्य' है। संगीत दर्पण के लेखक दामोदर पण्डित के अनुसार, संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई। प्रागैतिहासिक काल से ही संगीत का प्रचलन रहा है। उस समय का मानव असंस्कृत तथा असभ्य था, परन्तु उसे संगीत व नृत्य से बहुत प्रेम था। प्रागैतिहासिक मानव वीणा वाद्य में तन्त्री के लिए ताड़ की पत्तियों के रेशे, घास तथा जानवरों की आँतों का प्रयोग करता था। वाद्यों के विकास के क्रम में विचारकों का मानना है कि पहले ताल वाद्य, फिर तत् वाद्य के रूप में तीर कमान और फिर सुषिर वाद्य का आविष्कार सबसे अन्त में हुआ। जे. एफ. रोबोयम ने वाद्यों के क्रमिक विकास में तत् वाद्यों को सबसे प्राचीन, सुषिर वाद्यों को उसके पश्चात् के वाद्यों के विकास की अन्तिम प्रक्रिया के रूप में लिया है। पुरातत्त्व विज्ञान की खुदाइयों से प्रदर्शित होता है कि सुदूर 5000 ई. पूर्व में मनुष्य बाँसुरी, वीणा तथा विभिन्न प्रकार के ड्रम बजाने की कला से परिचित था। प्रारम्भिक तत् वाद्य तथा ड्रम जैसे वाद्य के चिह्न सिन्धु सभ्यता से

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1 – 2025

मिलते हैं। प्राचीन सभ्यता के कुछ चित्रों में चित्रलेख तत् वाद्य की अविकसित अवस्था का प्रतिनिधित्व करते मिलते हैं।

प्राचीनकाल

भारतीय वैदिक काल से पूर्व सिन्धु घाटी सभ्यता के काल में वीणा, ड्रम तथा मंजीरे के चित्र मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के पहाड़ों की खोज में मिले हैं। पत्थर या हड्डी की बनी हुई वीणा रोपड़ की खुदाई से प्राप्त होती है। वैदिक काल में साम गायन के साथ वाद्यों का भी प्रयोग होता रहा है। साक्ष्यों से पता चलता है कि उद्गाता के गायन के समय उनकी पत्नियाँ विभिन्न प्रकार की वीणाओं का वादन किया करती थीं। वैदिक वचन के आधार पर प्रमाणित होता है कि यज्ञान्त-गान अर्थात् सामगान में संगत के लिए वीणा का उपयोग किया जाता था। डॉ. परांजपे के अनुसार, ऋग्वेद में विभिन्न वाद्ययन्त्रों का उल्लेख प्राप्त होता है जैसे-दुन्दुमिवाण, नाली, कर्करि, गोधा, पिंग और आधाहि आदि। वैदिक काल में तन्तु वाद्य के लिए वीणा शब्द का प्रयोग किया जाता था। आघाटी, घाटलिका, काण्ड वीणा, पिच्छोला तालुक वीणा, गोधा वीणा, कविशीष्र्णी इत्यादि का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण के समय में प्रचलित विभिन्न वाद्यों का अध्ययन जनमानस की संगीत सम्बन्धी रुचि को दर्शाता है। वाल्मीकि ने रावण के अन्तपुर की संगीत सामग्री का विवरण देते हुए विभिन्न वाद्यों वीणा, विपंची, मृदंग, मडक, पटह, पणव, डिंडिम तथा आडम्बर आदि का उल्लेख किया है। रामायण काल में गाने के साथ वीणा भी बजाई जाती थी। महाभारत काल में गीत वादन तथा नृत्य का प्रयोग जनसामान्य के जनजीवन के अभिन्न अंग के रूप में होता रहा है। गायन के साथ वीणादिं वाद्यों का वादन होता था। वादित्र के अन्तर्गत तत्, वितत्, घन तथा सुषिर वाद्यों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख पाया जाता है। यज्ञादि समारोहों में गायन के साथ सदैव वीणा का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार देखने पर पता चलता है कि वीणा वाद्य की संगति धार्मिक तथा लौकिक दोनों पर होती है। व्यास के द्वारा भी लगातार

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1 – 2025

वीणा का उल्लेख मिलता है, जो इस ओर संकेत करता है कि वाद्यों में यह प्रमुख थी। प्राचीन युग का समय 1000 ई. पू. से 800 ई. के मध्य माना गया है। भरतमुनि ने इस समय जिन तन्त्र वाद्यों का उल्लेख किया है, उनमें सर्वप्रथम वीणा है। बीणा के दो अंग संज्ञक वीणाएँ, विपंची और चित्रा हैं। प्रत्यंग वीणाएँ कच्छपी और धौषिका हैं।महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रामायण में इस बात की पुष्टि की है कि उस युग में वीणा एक मुख्य तन्त्री वाद्य था और विपंची आदि उसके सहयोगी वाद्य थे। अध्यायी में वीणा का भी उल्लेख मिलता है। पाणिनी ने भी तन्त्री वाद्यों को केवल वीणा का मान दिया है।

मध्यकाल

भारतीय इतिहास के काल निर्धारकों ने 800 ई. से 1800 ई. तक की अवधि को मध्य युग माना है. कौटिल्य का अर्थशास्त्र पतंजलि का महाभाष्य आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने में ज्ञात होता है कि इस समय में प्रमुख तन्त्री वाद्य वीणा थी. इस समय विद्वानों ने परिवादिनी को छोड़कर किसी अन्य वाद्य का उल्लेख नहीं किया ।अमरकोश के नाट्यशास्त्र में संगीत सम्बन्धी जिन शब्दों का लिंगानुशासन दिया गया है. वे केवल गन्धर्व से सम्बन्ध रखते हैं. इसमें उल्लेखित शब्दों में तन्त्री वाद्यों के अन्तर्गत केवल वीणा, वल्लकी, विपंची और परिवादिनी का उल्लेख मिला है. टीकाकार माहेश्वर के अनुसार वीणा, वल्लकी और विपंची ये तीनों नाम वीणा के हैं तथा सात तारों वाली तन्त्री परिवादिनी है. भारतीय संगीत में इतिहास के मध्यकाल को दो वर्गों में बांटा गया है. प्रथम पूर्व मध्यकाल और द्वितीय उत्तर मध्यकाल. पूर्व मध्यकाल की अवधि में मतंग, सुधाकलश, नान्यदेव, सोमेश्वर, हरिपाल, सोमराजदेव तथा शारंगदेव इत्यादि संगीतशास्त्र ग्रन्थकारों की गणना उत्तर मध्यकाल में की जाती है.

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1 – 2025

आधुनिक काल

1800 ई. में स्वतन्त्रता प्राप्ति तक का काल आधुनिक काल है. इस काल में वीणाएं अपने कुछ विकसित प्रकारों सहित प्रचलित बनी रहीं.वैदिक काल से लेकर भरत के समय तक वाद्यों का कोई निश्चित वर्गीकरण नहीं था. सर्वप्रथम भरत के द्वारा चार प्रकारों के वाद्यों का उल्लेख नाट्यशास्त्र में वर्गीकृत किया गया.

इस प्रकार तत्, अवनद्ध, घन एवं सुषिर इन चारों प्रकार के वाद्यों के लक्षण को स्पष्ट करते हुए नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने कहा की

ततं तन्त्रीकृत ज्ञेयबनद्धं त पौष्करम् । घनं तालस्तु विज्ञेय: सुषिरों वंश उच्चते

इसमें तत् को तन्त्री वाद्य, अवनद्ध को पुष्कर वाद्य, घन को ताल वाद्य एवं सुषिर को वंशी वाद्य बताया है. इन सभी कालों को आधार मानते हुए भारतीय संगीत के वाद्यों को हम मुख्य रूप से चार वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं. वाद्ययन्त्रों का यह वर्गीकरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से चला आ रहा है. अत: कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक आते-आते वाद्यों में परिवर्तन होता चला गया । आधुनिक काल में चार प्रकार के वाद्यों को मान्यता प्राप्त है जैसे अवनध वाद्य तत् वाद्य और सुषिर वाद्य जिनका प्रयोग आज संगीत में बखूबी रूप से किया जाता है

संदर्भ ग्रथ - :

डां पराज्पे - भारतीय संगीत का इतिहास

वसंत - संगीत विशारद

लाल मणि मिश्र - भारतीय संगीत वाद्य

आचार्य भरत - नाटयशास्त्र

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: ***2168-2259 (online)***
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1 – 2025

डां प्रकाश मांडिक - भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य

डां अंजना भार्गव - भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन

डां विवेक कुमार जैन - उत्तर एवं दक्षिणी भारतीय शास्त्रीय संगीत में अवनद् वाद्य

डां अरुण मिश्रा - भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved